परिशिष्ठ क.–12

गायन/स्वरवाद्य पाठ्यक्रम (स्वाध्यायी)
एम.ए./एम.म्यूज. प्रथम वर्ष
प्रथम प्रश्नपत्र
भारतीय संगीत का इतिहास

समयः–3 घंटे

पूर्णांक– 100

1. संगीत की उत्पत्ति से संबंधित विभिन्न मान्यताओं , भारतीय एवं पाश्चात्य मतों का परिचय। प्राग्वैदिक, वैदिक, शिक्षा, पौराणिक, रामायण, मौर्य एवं गुप्त काल के भारतीय संगीत का परिचय।
2. भरतकृत नाट्यशास्त्र का सामान्य परिचय व संगीत से संबंधित अध्यायों की विशेष सामग्री की जानकारी। वृहददेशी, संगीत रत्नाकर एवं संगीत राज ग्रंथों का परिचय। भारतीय की दो धाराओं गांधर्व एवं गान तथा मार्ग एवं देशी का अध्ययन। जाति की परिभाषा, लक्षण तथा भेद। ग्राम राग(पंचगीति) और देशी राग वर्गीकरण का अध्ययन।
3. ग्राम एवं मूर्छना की परिभाषा तथा उनके प्रकार। ग्राम की लोकविधि के आधार पर बनने वाली चौरासी शुद्ध तानों का ज्ञान। वर्तमान में प्रचलित किसी एक थाट में मूर्च्छना के आधार पर अन्य थाटों की उत्पत्ति। स्वर–प्रस्तार, खण्डमेरू, नष्ट एवं उद्दिष्ट विधि का अध्ययन।
4. भारतीय सगीत में वाद्यों के वर्गीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन व वित्त वाद्य का स्पष्टीकरण। मध्यकालीन ग्रन्थों के आधार पर एकतंत्री, आलापनी, किन्नरी, चित्रन्त्री, पिनाकी, वंश एवं मधुकरी वाद्यों का अध्ययन।

5. इब्राहित आदिलशाह (द्वितीय) कृष्णानन्द व्यास, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, राजा नवाब अली, पं. रामचतुर मलिक, उस्ताद जिया मोईनुद्दीन डागर, उस्ताद बहराम खॉ, पं. एस.एन.रातंजनकर, पं. भीमसेन जोशी, संत पुरंदर दास, संत त्यागराज, श्यामा शास्त्री, मुत्तु स्वामी दीक्षित का सांगीतिक योगदान।
6. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।
7. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम से उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमें निबद्ध करना।
8. पाठ्यक्रम के रागों में उच्चस्तरीय आलाप लेखन।

गायन/स्वरवाद्य पाठ्यक्रम (स्वाध्यायी) एम.ए./एम.म्यूज. प्रथम वर्ष

द्वितीय प्रश्नपत्र

संगीत शास्त्र के क्रियात्मक सिद्वांत

समय– 3 घंटे पूर्णांक– 100

1. रागांग वर्गीकरण का परिचय। कल्याण, भैरव, तोड़ी रागांगो का विशेष अध्ययन तथा इन अंगों के अंतर्गत आने वाले रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन। पं. भातखण्डे जी द्वारा निर्दिष्टि हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के सर्वसाधारण नियम।

2. घराने का अर्थ एवं महत्व। ख्याल गायन के दिल्ली, ग्वालियर तथा पटियाला घरानों की जानकारी। तानसेन और उनके बंशजों की शिष्य परंपरा की जानकारी। सेनिया घराने के मुख्य कलाकारों का परिचय। बीन (रूद्रवीणा) का रामपुर घराना, इमदादखनी सितार एवं सुरबहार का घराना एवं हाफिज अली के सरोद घरानों का अध्ययन। प्रमुख शहनाई वादकों का परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।

3. काकु, कुतप, वृन्द का शास्त्रीय परिचय। सरोद, संतूर, विचित्र वीणा, तानपुरा, बेला (वायलिन), इसराजत्र दिलरूबा, बांसुरी वाद्यों की उत्पत्ति एवं विकास का अध्ययन।

4. विभिन्न प्रकार की बंदिशों एवं गतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन काव्य और संगीत तथा छन्द और ताल का संबंध।

5. भारतीय संगीत के लिये आवश्यक कंठ संस्कार की विधि। स्वरोत्पादक यंत्र का सामान्य परिचय। श्वसन क्रिया, कंठ विकार के कारण एवं निदान।

6. तान एवं तिहाई रचना। (विभिन्न तालों में विभिन्न मात्राओं से भिन्न–भिन्न प्रकार की तान एवं तिहाई बनाकर स्वर ताल में निबद्ध करना)।

7. निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन।

   :– 1. पुरिया कल्याण 2. अहीर भैरव 3. मारू बिहाग 4. बिलासखानी तोड़ी 5. जोग 6. देसी 7. बसन्तमुखारी 8. श्री 9. शुद्धकल्याण 10. श्यामकल्याण 11. बैरागी (भैरव) 12. गुर्जरी तोड़ी 13. भूपालतोड़ी 14. झिझोंटी 15. नन्द 16. सोहनी 17. शंकरा 18. कलावती 19. हन्सध्वनि।

गायन/स्वरवाद्य पाठ्यक्रम (स्वाध्यायी) एम.ए./एम.म्यूज. प्रथम वर्ष

प्रायोगिक :– 1 प्रदर्शन एवं मौखिक

समय–13 घंटे पूर्णांक– 300

1. पूर्ण पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्क्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन–

अ. निम्नलिखित रागों में से एक बड़ा ख्याल या विलंबित रचना (गत) तथा एक छोटा ख्याल या मध्य लय की रचना (गत) का विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन :– 1. पुरिया कल्याण 2. अहीर भैरव 3. मारू बिहाग 4. बिलासखानी तोड़ी 5. जोग 6. देसी 7. बसन्तमुखारी 8. श्री

ब. निम्नलिखित रागों का सामान्य परिचय एवं मध्य लय की रचना का आलाप तान/तोडों सहित प्रदर्शन 9. शुद्धकल्याण 10. श्यामकल्याण 11. बैरागी (भैरव) 12. गुर्जरी तोड़ी 13. भूपालतोड़ी 14. झिझोंटी 15. नन्द 16. सोहनी 17. शंकरा 18. कलावती 19. हन्सध्वनि।

स. राग खमाज, भैरवी, पहाड़ी अथवा शिवरंजनी में से किसी एक राग में ठुमरी या टप्पा का गायन। वाद्य के विद्यर्थी द्वारा इन रागों में से किसी एक राग में ठुमरी शैली की बंदिश अथवा धुन का प्रदर्शन।

2. उपर्युक्त रागों में से पृथक–पृथक रागों में एक ध्रपद एक धमार (उपज सहित) एक तराने एवं एक त्रिवट/चतुरंग का विस्तृत गायकी सहित प्रदर्शन अथवा अपने वाद्य पर तीन ताल के पृथक अन्य दो तालों में रचनाओं का आलाप – तान सहित वादन।

गायन / स्वरवाद्य पाठ्यक्रम (स्वाध्यायी)
एमम्यूज / एम.ए. प्रथम वर्ष
प्रायोगिक:-2 मंच प्रदर्शन

समय– 30 मिनिट **पूर्णांक– 150**

4. परीक्षार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोई एक राग रचना का (विस्तृत गायकी / तन्त्रकारी सहित) प्रदर्शन।
5. परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से किसी एक राग की गायकी / तन्त्रकारी के साथ प्रस्तुति।
6. पाठ्यकम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा अथवा ठुमरी शैली पर आधारित रचना अथवा धुन का प्रदर्शन।

आंतरिक मूल्यांकन

पूर्णांक: 50

आवश्यक निर्देश–: आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि / तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक
16. ध्वनि और संगीत – प्रो. ललित किशोर

परिशिष्ठ क.–13

एम.ए./एम.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)

विषयः– गायन/स्वरवाद्य

प्रथम प्रश्नपत्र

भारतीय संगीत का इतिहास

समयः– 3 घण्टे **पूर्णांक–100**

1. श्रुति और स्वर का संबंध तथा श्रुति और स्वर पर विभिन्न ग्रंथकारों के विचार। श्रुतियों के विभिन्न नाप (प्रमाण श्रुति उपमहती श्रुति और महती श्रुति)। भरत, शारंगदेव, रामामात्य, व्यकंटमखी और अहोबल के शुद्ध विकृत स्वरों का अध्ययन।
2. प्रबंध की परिभाषा एवं प्रकार । प्रबंध के धातु एवं अंगों का परिचय। ध्रुपद–धमार की उत्पत्ति एवं विकास तथा ध्रुपद की बानियों एवं वर्तमान में प्रचलित परम्पराओं (दरभंगा, डागर, विष्णुपुर और हवेली) का अध्ययन। ध्रुपद शैली का ख्याल और वादन की शैलियों पर हुए प्रभाव का विवेचन।

3. मध्ययुग में भारतीय संगीत पर विदेशी संगीत के प्रभाव का अध्ययन। 'स्वरमेल कलानिधी' 'राग तरंगिणी', 'संगीत पारिजात' एवं 'चतुर्दण्डिप्रकाशिका', 'संगीत दर्पण' एवं 'रागविबोध' ग्रंथों का परिचय।
4. मार्ग ताल एवं देशी ताल पद्धति का परिचय एवं ताल के दस प्राणों का अध्ययन। कर्नाटक संगीत पद्धति के प्रमुख गीत प्रकारों का अध्ययन।
5. 'अष्टछाप' के संत कवियों के संगीत संबंधित विषयों का परिचय। अबुल फजल, सवाई प्रताप सिंह देव, विलियम जोन्स, कैप्टन विलर्ड, एस.एम.टैगोर, इ.क्लीमेंट्स, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, पं. कुमार गन्धर्व, उस्ताद अमीर खाँ (गायन), आचार्य बृहस्पति, श्री पी. साम्बामूर्ती और डॉ. प्रेमलता शर्मा द्वारा किये गये सांगीतिक कार्यो का परिचय।
6. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।
7. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम से उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमें निबद्ध करना।
8. पाठ्यक्रम के रागो में उच्चस्तरीय आलाप लेखन।

एम.ए./एम.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)

विषय :– गायन/स्वरवाद्य

द्वितीय प्रश्नपत्र

संगीत शास्त्र के कियात्मक सिद्वांत

समयः– 3 घण्टे पूर्णांक–100

1. राग–रागिनी वर्गीकरण, मेल राग वर्गीकरण एवं थाट–राग वर्गीकरण का अध्ययन। रागांग वर्गीकरण के अंतर्गत सारंग मल्हार एवं कान्हड़ा रागागों का अध्ययन।

2. ख्याल गायन के आगरा, किराना तथा जयपुर घरानों का परिचय एवं उनकी गायन शैलियों का अध्ययन। बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खॉ का (सितर–सरोद) घराना, उस्ताद मुश्ताक अली खॉ का (सितार) घराना एवं प्रमुख सारंगी, बेला (वायलिन) तथा बॉसुनी वादकों का शैलीगत परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।

3. भारतीय संगीत में वृन्दगान एवं वृन्दवादन। रूद्रवीणा, सितार, सुरबहर, सारंगी, शहनाई वाद्यों की उत्पत्ति औ विकास का अध्ययन। आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों की जानकारी।

4. सौन्दर्य शास्त्र का परिचय, कला की परिभाषा, कलाओं की संख्या और प्रकार। रस की परिभाषा व भेदों का सामान्य अध्ययन। रस और संगीत का संबंध तथा इस विषय पर आधुनिक विचारधारा का अध्ययन।

5. शोध प्रविधि का सामान्य अध्ययन– अनुसंधान की परिभाषा एवं प्रक्रेया। भारतीय संगीत में शोध की दिशाएं। शोध विषय का चयन। शोध विषय की रूपरेखा। ग्रन्थ सूची।

6. तान एवं तिहाई रचना। (विभिन्न तालों में विभिन्न मात्राओं से भिन्न–भिन्न प्रकार की तान एवं तिहाई बनाकर स्वर ताल में निबद्ध करना)

7. निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्यक्रनों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन।

   1. दरबारी कान्हाड़ा 2. मियॉ मल्हार 3. शुद्ध सारंग 4. रागेश्री 5. जोग कौन्स 6. भटियार 7. कौन्सी कान्हड़ा 8. गौड़ सारंग 9. आभोगी कान्हड़ा 10. नायकी कान्हड़ा 11. गौड मल्हार 12. मेघ मल्हार 13. मध्यमादी सारंग 14. मधुकौन्स 15. मधुवन्ती 16. कोमल रिषभ आसावरी 17 गुणकली (गुणकी भैरव थाट) 18 विभास (भैरव) 19. परज।

एम.ए./एम.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)

विषयः– गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिकः-1 प्रदर्शन एवं मौखिक

समय 1 घण्टे

1. पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय परिचय तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन– निम्नलिखित 8 रागों मे से एक बडा ख्याल या विलम्बित रचना (गत) तथा एक छोटा ख्याल या मध्यलय की रचना (गत) की विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन–

अ– 1. दरबारी कान्हड़ा, 2. मियॉ मल्हार 3. शुद्ध सारंग 4. रागेश्री 5. जोग कौन्स, 6. भटियार 7. कौन्सी कान्हड़ा 8. गौड़ सारंग।

ब– निम्नलिखित रागों का सामान्य ज्ञान एवं मध्यलय की रचना का आलाप–तान सहित प्रदर्शन।
1. अभोगी कान्हड़ा 2. नायकी कान्हड़ा 3. गौड मल्हार 4. मेघ मल्हार 5. मध्यमादी सारंग 6. मधुकौन्स 7. मधुवन्ती 8. कोमल रिषभ आसावरी 9. गुणकली (गुणक्री भैरव थाट) 10. विभास (भैरव) 11. परज।

स– राग देश, तिलंग, भैरवी एवं पीलू में से किसी एक राग में ठुमरी का गायन। वाद्य के विद्यार्थी द्वारा इन रागों मे से किसी एक राग में ठुमरी शैली का वादन या धुन का प्रदर्शन।

2. उप्र्युक्त रागों मे से एक ध्रुपद एक धमार (उपज सहित) एवं एक तराने, त्रिवट/चतुरंग का विस्तृत गायकी सहित प्रदर्शन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से पृथक अन्य दो तालों में रचनाओं का आलाप–तान सहित वादन।

10

एम.ए./एम.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)
विषयः– गायन/स्वरवाद्य
प्रायोगिकः-2 मंच प्रदर्शन

समय 1 घण्टे **पूर्णांक–150**

1. परीक्षार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोई एक राग इच्छानुसार चुनकर 30 मिनिट में विलंबित एवं मध्यलय की रचना का (विस्तृत गायकी/तन्त्रकारी सहित) प्रदर्शन।
2. परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से किसी एक राग की गायकी/तन्त्रकारी के साथ प्रस्तुति।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा अथवा ठुमरी शैली पर आधारित रचना अथवा धुन का प्रदर्शन।

आंतरिक मूल्यांकन

पूर्णांकः 50

आवश्यक निर्देश–: आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6 अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक
16. ध्वनि और संगीत – प्रो. ललित किशोर